Date
Page 105.

21/12/2020 Monday

(पाठ - 10 वाख)

कवयित्री - ललद्यद

(3) आई - - - - - - . क्या उतराई

शब्दार्थ - सुषुम सेतु - सुषुम्ना नाड़ी के मध्य (यह नाड़ी इड़ा और पिंगला नामक नाड़ियों के मध्य स्थित है।) माझी - नाविक, पार उतारने वाला, ईश्वर

भावार्थ - कवयित्री कहती है - मैं आई तो सीधी राह पर किन्तु संसार में आने के बाद मैंने अपनी राह उल्टी पकड़ ली अर्थात् मैंने परमात्मा की प्राप्ति का सरल मार्ग अपनाना चाहा लेकिन भूलवश मैंने हठयोग का मार्ग ईश्वर को प्राप्त करने के लिए अपना लिया। परिणामतः सारा जीवन मुझे सुषुम्ना नाड़ी की साधना में विभिन्न योग-साधनाएँ करने में बीत गया। इसी प्रकार हठयोग के जटिल प्रयास में उलझकर मेरा जीवन बीतने को आ गया लेकिन मुझे कुछ भी प्राप्त नहीं हुआ। जिस तरह जब हम नौका से नदी पार करते हैं तो हमें नाविक को उतराई अर्थात् कुछ पैसा देना होता है उसी प्रकार इस संसार के नाविक अर्थात् परमात्मा को अब कवयित्री क्या देगी क्योंकि उसने तो ऐसा कोई कार्य किया ही नहीं जिसका जवाब वह ईश्वर को उतराई रूपी दे सके। उसके पास कुछ भी नहीं बचा अर्थात् उसने कोई ऐसा कर्म ही नहीं किया जो ईश्वर की प्राप्ति में सहायक होता। वह कठिन योग में ही लगी रह गयी।

21/12/2020 Monday

(3)

काव्यांश पर आधारित प्रश्नोत्तर

आई सीधी राह से — — — — क्या उतराई ?

प्रश्न कवयित्री किस पथ पर ठीक से आई थीं ?

उत्तर कवयित्री परमात्मा प्राप्ति के पथ पर ठीक से आई थीं।

प्रश्न इस पद्यांश में 'जेब टटोलने' का क्या अर्थ है ?

उत्तर इस पद्यांश में 'जेब टटोलने' का अर्थ अपने सतकर्म को गिनना है।

प्रश्न - कवयित्री ने अपना दिन कैसे बिता दिया ?

(या)

कवयित्री ने किस साधना में लगने के कारण कुछ भी नहीं पाया ?

उत्तर - कवयित्री ने हठयोग की कठिन साधना के माध्यम से परमात्मा की भक्ति का मार्ग अपना-कर अपना जीवन बिता दिया। हठयोग की कठिन साधना के कारण ही उन्हें जीवन में कुछ भी नहीं प्राप्त हुआ।

प्रश्न - माझी कौन है ? कवयित्री उसके सामने क्यों परेशान है ?

उत्तर - माझी (नाविक) ईश्वर है। इस संसार रूपी

भवसागर से पार कराने वाला ईश्वर ही है। कवयित्री उसके सामने इसलिए परेशान है क्योंकि उसके पास उसे देने के लिए कुछ भी नहीं है। अर्थात कवयित्री ने हठयोग की साधना के चक्कर में सत कर्म नहीं किए।

प्रश्न 'बीत गया दिन आह' के माध्यम से कवयित्री क्या कहना चाह रही है?

उत्तर 'बीत गया दिन आह' के माध्यम से कवयित्री पछतावा व्यक्त कर रही है कि उसने हठयोग जैसी साधना का सहारा क्यों लिया?

प्रश्न 'सुषुम सेतु' से क्या तात्पर्य है?

उत्तर 'सुषुम सेतु' का तात्पर्य नाड़ी की साधना को कहा गया है। हठयोगी सुषुम्ना नाड़ी में कुंडलि जाग्रत करने के लिए विभिन्न योग-साधनाएँ करते हैं।